(1) शैक्षिक निर्देशन (Educational Guidance) :-

अर्थ :-
शैक्षिक निर्देशन, निर्देशन की एक प्रक्रिया है जिसको व्यक्ति के शैक्षिक कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप देते हुए उसका सर्वांगीण विकास किया जाता है तथा समाज एवं व्यक्ति के हित में उसे इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने की योग्यता प्राप्त कर ले।

* शैक्षिक निर्देशन की परिभाषा :-

जोन्स के अनुसार :- "शैक्षिक निर्देशन का संबंध छात्रों को निर्देशन प्रदान की जाने वाली उस सहायता से है, जो उन्हें विद्यालयों, पाठ्यचर्याओं, पाठ्यक्रम के चुनाव एवं विद्यालयों के जीवन में समबद्ध समायोजनों के लिए अपेक्षित है।"

* रूथ-स्ट्रैंग के शब्दों में, :- "शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को उचित कार्यक्रमों को बनाना एवं उसमें प्रगति करने में सहायता देना है।"

* मार्यरन के अनुसार :- "शैक्षिक निर्देशन छात्र के विकास अथवा शिक्षा हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए छात्रों के विभिन्न गुणों एवं विकास के अवसरों के विभिन्न समूहों के मध्य संबंध स्थापित करने वाला उपक्रम है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक निर्देशन के द्वारा छात्र

**SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TE...**
KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION - 2020-22

COURSE NAME – B.Ed.

SUBJECT - C11(c) Guidance and counselling

TOPIC NAME - Type of Guidance

DATE - 18/01/22

(1) शैक्षिक निर्देशन (Educational Guidance) :-

अर्थ :- शैक्षिक निर्देशन, निर्देशन की एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के शैक्षिक कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप देते हुए उसका सर्वांगीण विकास किया जाता है तथा समाज एवं व्यक्ति के हित में उसे इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने की योग्यता प्राप्त कर लें।

* शैक्षिक निर्देशन की परिभाषा :-

जोन्स के अनुसार :- "शैक्षिक निर्देशन का संबंध छात्रों को निर्देशन प्रदान की जाने वाली उस सहायता से है, जो उन्हें विद्यालयों, पाठ्यचर्याओं, पाठ्यक्रम के चुनाव एवं विद्यालयों के जीवन में सम्बद्ध समायोजनों के लिए अपेक्षित है।"

* रूथ-स्ट्रैंग के शब्दों में, :- "शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को उचित कार्यक्रमों को बनाना एवं उसमें प्रगति करने में सहायता देना है।"

* मायर्स के अनुसार :- "शैक्षिक निर्देशन छात्र के विकास अथवा शिक्षा हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए छात्रों के विभिन्न गुणों एवं विकास के अवसरों के विभिन्न समूहों के मध्य संबंध स्थापित करने वाला उपक्रम है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक निर्देशन के द्वारा छात्र

मारेन तथा हारिमन के शब्दों में -: "शैक्षिक निर्देशन व्यक्तिगत छात्रों की योग्यताओं, रुचियों, प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं का पता लगाने की विधि प्रदान करता है।"

छात्र की मानसिक योग्यता और शैक्षिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक निर्देशन प्रदान कर उनका सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं अन्य प्रकार से सर्वांगीण विकास की योग्यता प्रदान की जाती है।

## * शैक्षिक निर्देशन की विशेषताएँ -:
## (Characteristics of Educational Guidance)

(1) शैक्षिक निर्देशन का संबंध विद्यालय और विद्यालय में होने वाली क्रियाओं से होता है।

(2) शैक्षिक निर्देशन छात्रों को उनके विषय चयन में सहायता करता है।

(3) शैक्षिक निर्देशन में छात्रों की योग्यताओं, क्षमताओं तथा रुचियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान कर संबंधित समस्याओं का समाधान किया जाता है।

(4) शैक्षिक निर्देशन विद्यालय के उचित कार्यक्रम के वरण में तथा उसमें प्रगति करने में सहायता करता है।

(5) यह अधिगम में आनेवाली कठिनाईयों और समस्याओं के समाधान में छात्रों की मदद करता है।

## * शैक्षिक निर्देशन का महत्व एवं कार्य -:
## (Importance and Functions of Educational Guidance)

(1) शैक्षिक निर्देशन छात्रों को उनकी योग्यताओं एवं क्षमताओं का ज्ञान करवाकर उनके लक्ष्य निर्धारण में सहायता करता है।

(2) विद्यालय में चलने वाले विविध पाठ्यक्रमों में से छात्र की योग्यता, क्षमता और लक्ष्य के अनुरूप पाठ्यक्रम के चयन में निर्देशन प्रदान करता है।

*

(3) शैक्षिक निर्देशन का एक कार्य छात्र को अधिगम में होने वाली कठिनाइयों को दूर करना है।

(4) कक्षा में अध्ययनरत छात्रों में वैयक्तिक भिन्नताएँ होना स्वाभाविक है इसके आधार पर विशिष्ट छात्रों की पहचान करना भी निर्देशन का कार्य है।

(5) विद्यालय में चलने वाली पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में उचित तथा उपयुक्त क्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित करने का कार्य भी शैक्षिक निर्देशन का ही है।

## * शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता (Need of Educational Guidance) :-

→ (i) पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों का चयन।

→ (ii) आगे की शिक्षा के लिए मार्गदर्शित करना।

→ (iii) नवीन विद्यालयों में समायोजन की दृष्टि से,

→ (iv) विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों की जानकारी प्रदान करना।

→ (v) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान (अपव्यय – विद्यार्थी पढ़ाई के बीच में छोड़ देना। अवरोधन :- एक ही class में फेल होकर बार-बार रहना।

→ (vi) विद्यालय, व्यवस्था, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण-विधि में परिवर्तन।

* शैक्षिक निर्देशन के उद्देश्य (Objectives of Educational Guidance) —

→ छात्रों की अन्तः शक्तियों को समझना।
(Understanding potentials of the students)
→ छात्रों को उनकी क्षमताओं का ज्ञान कराना।
(To aware students of their potentialities)
→ पाठ्यक्रम चयन में सहायता (Helping in selecting curriculum)
→ आत्म-निर्देशन (Self Guidance)
→ उत्तम अभिरुचियों का विकास करना (Development of best Aptitude)
→ अध्ययन की आदतों का विकास (To Develop Good Study Habits)
→ पुस्तकालय के उपयोग के लिए प्रोत्साहन (Encouragment for the use of Library)
→ स्वास्थ्य समायोजन (Healthy Adjustment)
→ आत्मानुशासन का विकास (Development of Self discipline)
→ शैक्षिक एवं व्यवसायिक अवसरों की जानकारी
(Awarness about educational and vocational opportunities)
→ समाज कल्याण (Social welfare)
→ स्वयं निर्णय लेना (Self Decision)

* शैक्षिक निर्देशन के सिद्धांत —

इसके निम्नलिखित सिद्धांत हैं —

→ निर्देशन समस्त छात्रों को उपलब्ध होना चाहिए
→ समस्या का समाधान, प्रारम्भ में ही होना चाहिए
→ प्रमापीकृत परीक्षाओं को प्रयुक्त किया जाए।
→ समुचित एवं संबंधित सूचनाओं का संकलन किया जाए।
→ छात्र का निरंतर अध्ययन किया जाये।
→ विद्यालय एवं अभिभावकों के मध्य गहन संबंध स्थापित करना।

नोट :- प्रमापीकृत परीक्षाओं का तात्पर्य है विद्यालय में प्रवेश परीक्षा के आधार पर वर्ग नामांकन)

* विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक निर्देशन —
(Educational Guidance At Various Stages)

मनोवैज्ञानिक जोन्स ने अपनी पुस्तक 'निर्देशन के सिद्धांत' के अंतर्गत यह बताया है कि "निर्देशन संपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम का अभिन्न अंग है। यह छात्रों को सकारात्मक निर्देशन प्रदान करते हुए शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए बालक के विद्यालय से प्रथम संपर्क स्थापित होने से लेकर जब तक वह किसी रोजगार हेतु योग्य नहीं हो जाता, निरंतर प्रक्रिया के रूप में चलता रहता है।"

अतः निर्देशन सेवाएं विद्यालयों के विभिन्न स्तरों पर किसी न किसी रूप में चलता रहता है —

→ (1) प्राथमिक विद्यालयों की निर्देशन व्यवस्था।
→ (2) माध्यमिक विद्यालयों की निर्देशन व्यवस्था।
→ (3) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की निर्देशन व्यवस्था।

## (1) प्रारंभिक विद्यालयों की निर्देशन व्यवस्था :-

प्रारंभिक या प्राइमरी स्तर पर बालकों की समस्याएँ ज्यादा जटिल नहीं होती है, इस स्तर पर उतने प्रशिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक ही निर्देशन व्यवस्था को देखते हैं जिसमें शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि बालकों की समस्याओं को शिक्षक अच्छी तरह से समझता है।

अतः प्रधानाध्यापक निर्देशन सेवाओं में शिक्षकों की मदद करते हैं और विद्यालय की बाहर की संस्थाओं से सहयोग प्राप्त कर अन्य कार्यों को सम्पन्न करते हैं। इसमें शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों का भी योगदान होता है।

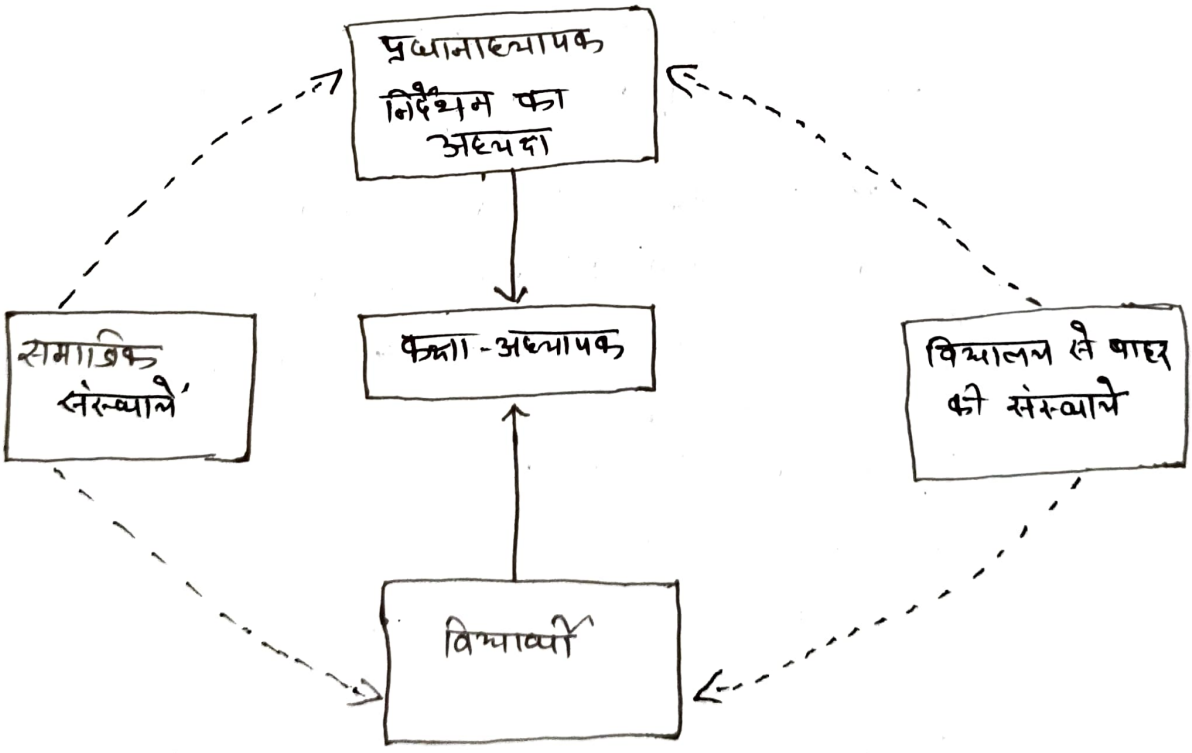


(प्राथमिक स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम)

### * प्राथमिक स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्य :-

(1) विद्यार्थियों की वैयक्तिक समस्याओं, आवश्यकताओं तथा गुणों का अवलोकन करना।

(2) अवलोकन किये गये तथ्यों को संचयी आलेख पत्र लिखना।
(3) उपस्थित शैक्षिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ सहयोग के साथ कार्य करना।
(4) अभिभावकों एवं विद्यालयों के मध्य मधुर संबंध बनाना
(5) विद्यार्थियों की प्रगति का सतत रूप में मूल्यांकन करना।
(6) शिक्षा संबंधी या अन्य समस्याओं से ग्रसित बालकों की पहचान करना।
(7) सामाजिक एवं संवेगिक समायोजन करने में असफल बालकों का पहचान करना।

(2) ~~माध्यमिक~~ और मध्यमिक विद्यालय की निर्देशन व्यवस्था (organisation of Guidance in Middle and High school) —:

इस स्तर पर निर्देशन का स्वरूप संगठित एवं व्यवस्थित होता है। विद्यालयों में निर्देशन कार्य में निर्देशन समिति एवं निर्देशन प्रदाता, प्रधानाध्यापकों की सहायता करते है। निर्देशन कार्यों में मुख्य स्थान, निर्देशन प्रदाता का होता है। इस स्तर पर व्यवसायिक पाठ्यक्रमों की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है उन्हें इसप्रकार निर्देशित किया जाता है ताकि छात्र - छात्राएँ अपनी रुचियों के अनुरूप विषयों का चयन कर सके। इसके लिए निर्देशन प्रदाता, प्रधानाचार्य एवं सभी शिक्षकों द्वारा आवश्यक निर्देशन प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य भी प्राथमिक स्तर पर निर्देशन व्यवस्था जैसा ही होता है।

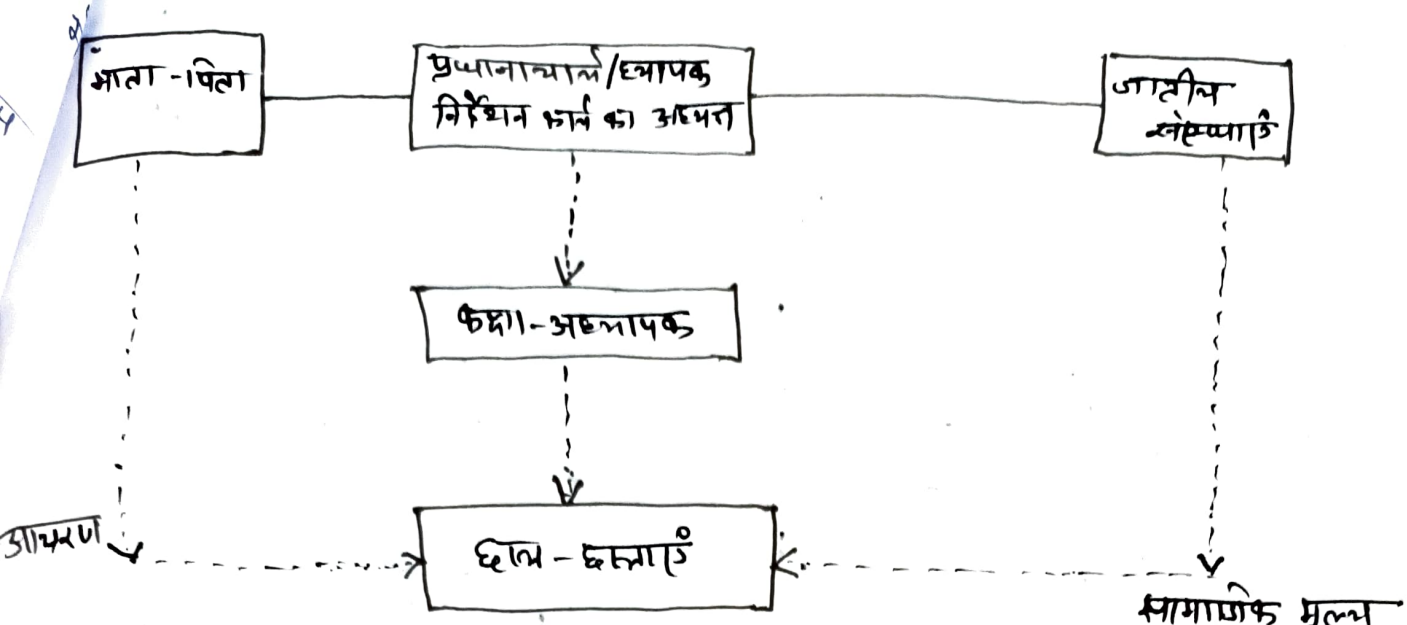


(माध्यमिक शिक्षा पर विद्यालयी निर्देशन व्यवस्था)

(3) उच्चतर +2 माध्यमिक विद्यालय की निर्देशन व्यवस्था
(organisation of Guidance in senior secondary school)

मुदालियार (1952) आयोग की संस्तुति के आधार पर देश के कुछ विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को प्रमुखतः निर्देशन सहायता की आवश्यकता होती है। इस स्तर पर विद्यार्थी विभिन्न व्यवसायों के चयन के लिए निर्देशन प्राप्त करना चाहते हैं इसके आलावा उच्च - शिक्षण संस्थानों में विषयों के चयन या नामांकन संबंधित निर्देशन की व्यवस्था भी की जाती है।

अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन की अधिक आवश्यकता होती है जो एक प्रशिक्षित निर्देशन कार्यकर्ताओं या प्रशिक्षित वरिष्ठ शिक्षकों द्वारा किया जाता है।

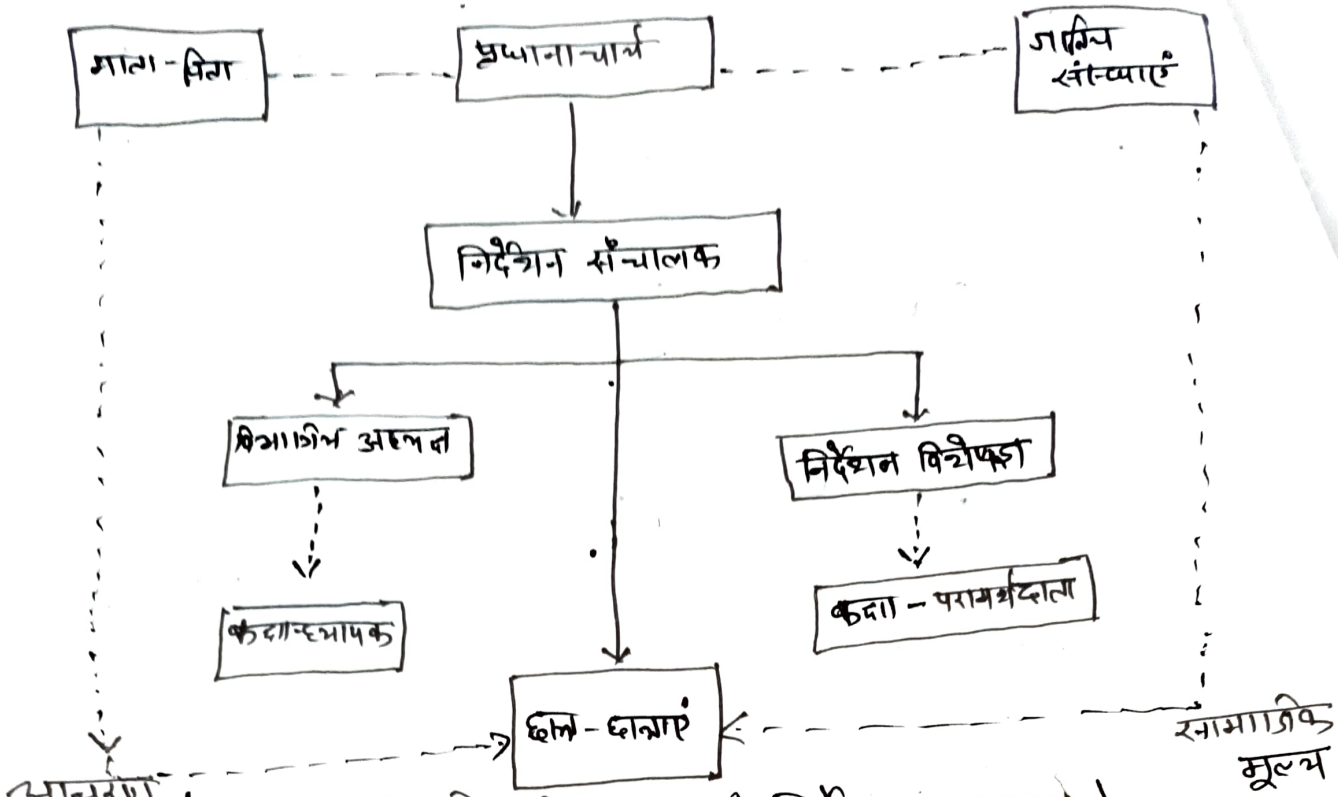

(उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की निर्देशन व्यवस्था)

इसका उद्देश्य भी यही होता है।

प्रधान शिक्षक (1-8) प्रधानाध्यापक (9+10वीं)

* निर्देशन सेवाओं में प्रधानाचार्य (11-12वीं) की भूमिका :-
(Role of Principal in Guidance Service)

शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यालयी स्तर पर ~~प्रधानाध्यापक~~ निर्देशन कार्यों में प्रधान शिक्षक (1-8वीं तक), प्रधानाध्यापक (9-10वीं तक) तथा प्रधानाचार्य (11-12वीं तक) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर ये अपनी-2 भूमिका का निर्वहन करते हुए अपने शैक्षिक कर्मचारियों तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों को निर्देशन प्रदान करते हैं। इसीलिए शिक्षाशास्त्री या विद्वान वी० वी० रेन के अनुसार :- "घड़ी में प्रधान कमानी, मशीन में चक्र अथवा जलयान में चालीकरण का जो स्थान है वही स्थान किसी भी विद्यालय में प्रधान शिक्षक, प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्य का है।"

किसी भी विद्यालय की प्रगति, उस विद्यालय के प्रधान शिक्षकों की समझ, प्रशासकीय क्षमता एवं योग्यता पर निर्भर करती है। निर्देशन प्रक्रिया को शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना गया है; अतः प्रधानाध्यापक या प्रधानाचार्य एक कुशल निर्देशक के रूप में नेतृत्व कर्ता होना चाहिए। साथ ही उच्चतर स्तर पर कुशल निर्देशकों को नियुक्त कर समय-समय पर छात्रों को निर्देशन प्रदान किया जाना है। प्रधानाचार्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने समस्त सहयोगी शिक्षकों को निर्देशन कार्य हेतु प्रोत्साहित कर उन्हें समस्त प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध कराये।

* निर्देशन कार्यक्रम हेतु प्रधान शिक्षक, प्रधानाध्यापक तथा प्रधानाचार्य का उत्तरदायित्व —

(1) निर्देशन सेवाओं हेतु उचित भवन का निर्माण करना।
(2) निर्देशन कार्यक्रमों के लिए धन की व्यवस्था करना।
(3) निर्देशन समिति का गठन करना।
(4) विद्यालय में निर्देशन संबंधी क्रियाओं का निरीक्षण करना।
(5) विद्यालय के शिक्षकों को, निर्देशन का महत्व समझाना तथा उद्देश्य को समझने में सहयोग प्रदान करना।
(6) विद्यालय में योग्य एवं कुशल निर्देशन कार्यकर्ताओं की नियुक्ति करना।
(7) छात्रों के अभिभावकों को निर्देशन सेवाओं के संबंध में जानकारी प्रदान करना।

(6)

## * शैक्षिक निर्देशन की प्रक्रिया या सोपान —:
(Process or stepies of Educational Guidance)

सोपान या प्रक्रिया →

- → प्रारंभिक वार्ता
- → प्राथमिक साक्षात्कार
- → छात्र की सामाजिक - आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थिति का अध्ययन।
- → मनोवैज्ञानिक परीक्षण।
- → विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण
- → स्वास्थ्य परीक्षण
- → अंतिम साक्षात्कार
- → पार्श्वचित्रों को निर्मित करना
- → सम्मेलन का आयोजन
- → आलेख लिखना।
- → अनुगामी सेवाएँ (पूर्व में किये गये कार्यों की समीक्षा करना तथा यह जानना कि निर्देशन कितना प्रभावशाली रहा है।)

## * शैक्षिक निर्देशन में शिक्षकों की भूमिका —:
(Role of Teachers in Educational Guidance)

(1) छात्रों के साथ वैयक्तिक संबंध स्थापित करना।

(2) विद्यालयों में असामाजिक तथा कुसमायोजन वाले बालकों का पता लगाना।

(3) अभिभावकों से संबंध स्थापित करना।

(4) छात्रों को पुस्तकालय का समुचित उपयोग करना सिखाना।

(5) पाठ्येत्तर सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना।

(6) जिन छात्रों का साक्षात्कार लिया जा चुका है उनको रिपोर्ट के अनुरूप निर्देशन प्रदान करना।

(7) विद्यार्थियों के अधिक विकास हेतु परिस्थितियों का निर्माण करना।

(8) अपने विषय से संबंध व्यवसायों तथा शैक्षिक अवसरों की सूचनाओं को छात्रों तक पहुँचाना।

(10) निर्देशन कार्यक्रम को अधिक सफल बनाने के लिए प्रधानाचार्य एवं उपबोधक को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करना।

(11) कक्षा में उत्तम वातावरण उत्पन्न करना।

## * शैक्षिक निर्देशन में शिक्षकों की भूमिका (Role of teacher in Guidance) :-

(1) छात्रों के साथ वैयक्तिक संबंध स्थापित करना।

(2) विद्यालय में असमाजिक तथा कुसमायोजित बालकों का पता लगाना।

(3) अभिभावकों से संपर्क स्थापित करना।

(4) विभिन्न समाजिक संस्थानों से संपर्क स्थापित करना।

(5) छात्रों को पुस्तकालय का समुचित उपयोग करना सीखाना।

(6) विद्यार्थियों के अधिक विकास हेतु परिस्थितियों का निर्माण करना।

(7) अपने विषय से संबंधित व्यवसायों, तथा शैक्षिक अवसरों की सूचनाओं को छात्रों तक पहुँचाना।

(8) कक्षा में उत्तम वातावरण पैदा करना।

**निष्कर्ष** :- उपरोक्त आधार पर निष्कर्ष कहा जा सकता है कि शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्रों में एक निर्देशन क्रियाएँ बहुत ही आवश्यक है जो छात्रों को अपने लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करती है।